

## विचार बिन्दु

मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र उसकी दस उंगलियाँ हैं। -रॉबर्ट कोलियर

## भारत के 15 लाख पारम्परिक तालाब प्राकृतिक जलवायु समाधान का उत्कृष्ट उदाहरण हैं

भारत के गाँवों में तालाब स्वयं में एक पारिस्थितिक तंत्र है जो विविध पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं, जैसे- जैव विविधता संरक्षण के साथ ही जलवायु परिवर्तन शमन और जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, जल शुद्धिकरण, बाढ़ शमन और सांस्कृतिक लाभ (जैसे, पर्यटन, स्वास्थ्यकर स्थल), पोषक तत्व का भण्डारण, कार्बन संचय, और आजीविका में बेहतर आदि के माध्यम से अनेक सतत विकास लक्ष्यों (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोलस) को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। परन्तु बड़े बांधों की तुलना में तालाबों के सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिक मूल्य को प्रायः अज्ञानवश कमतर आंका जाता है (देखें, डी.एन. पाण्डेय, साईंस, 293: 1763, 2001; एस. यादव व. सी.सी. गोयल, वेटर्नरी, 42(8): 107, 2022)।

आज की चर्चा इस बात पर केन्द्रित है कि यदि शहरों को पानी पीना है तो तालाब व एनीकट जैसे ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर, जो उच्चकोटि के प्राकृतिक जलवायु समाधान हैं, में निवेश अनिवार्य है। थोड़ी देर के कल्पना कीजिये कि आप एक बहुत बड़े शहर में रहते हैं। सारी सुख-सुविधाएँ आपके पास उपलब्ध हैं। बस अब पानी की कमी पड़ने लगी है, क्योंकि निरंतर बढ़ते हुये शहरवासियों की संख्या की कारण आपके पारंपरिक जलस्रोत सूख गये हैं। आप का सबसे बड़ा पारंपरिक बाँध जहाँ से आपको पानी मिलता था, अब सूख गया है। पारंपरिक बाँध इसलिए सूख गया क्योंकि आप उससे मिलने वाले पानी को लेते रहे, उपयोग किया, और गन्दा करके जल-मल के रूप में प्रतिदिन बहा दिया। पारंपरिक बाँध इसलिए भी सूख गया क्योंकि जिन जलग्रहण क्षेत्रों से पानी बहकर आता था अब वहाँ के लोगों ने अपनी आजीविका सुदृढ़ करने के लिये खेती और बागवानी करने के लिये जमीन विकसित कर लिया। मिट्टी को खेती योग्य बनाकर जुलूस से तृप्त करना प्रारंभ कर दिया। वर्षा का पानी जैसे ही खेत की गोद में गिरता है, मिट्टी उसे सोखना प्रारंभ कर देती है और एक बार में जब तक 90 से 100 मिलीमीटर तक बारिश न हो, वहाँ से पानी की एक बूँद नहीं बहती। गरीब किसानों द्वारा जहाँ-का-पानी-तहाँ रोकने के लिये अपने खेत में ही बाँध व खेत-तलाई बनाया न्याय के नैसर्गिक सिद्धांतों के अनुरूप ही है। अब ऊपरी जलग्रहण क्षेत्रों में रहने वाले लोग आपके सुख के लिये उस पानी को बहकर आपके पारंपरिक बाँध तक आने देने के बजाय मोर-क्रॉप-पर-ड्रॉप के सिद्धांत पर पानी का उपयोग स्वयं करने लगे हैं। वर्षा के पानी ने किसानों का आतिथ्य स्वीकार कर लिया है। अब वहाँ रुक जाता। अब वर्षा की मात्रा बढ़ने तक वहाँ रुका करेगा।

अब शायद आप समझ गये होंगे कि जयपुर के रामगढ़ में पानी क्यों नहीं आता? जब पानी बहकर आपके पास सैकड़ों साल तक बार-बार आता था, तब तो आप उसकी इज्जत कर नहीं पाये। शहरवासियों ने अपनी गन्दगी धोकर खूब बहाया।

समस्या अभी भी है। किस्सा अभी तो शुरू हुआ है। आगे बढ़िये। आपके पुराने बाँध के सूखने से आपके शहर के कुम्हें और बावडियाँ पानी से रीत कर केवल अपनी स्थापत्य कला का उदाहरण मात्र रह गयीं। जो थोड़ी-बहुत पानीवर थीं, उन्हें आपने कचरे से भाट दिया।

जब पानी आपके पास लौटकर आता था, आपने उसका उपयोग कर जल-मल के रूप में बह जाने दिया। पुनर्चक्रण द्वारा पुनः-उपयोग के योग्य बनाने की अकल ही नहीं आयी। फिर शहर से दूर ही सही, आप एक बड़ा बाँध निर्मित करते हैं, ताकि वहाँ से पानी लाया जा सके। आप आशा करते हैं कि उस बाँध के आसपास के गाँवों के संपूर्ण-परिदृश्य से जल एकत्र होकर आप द्वारा बनाये गये बाँध में आयेगा। आता भी है। आप उस जल को सैकड़ों किलोमीटर दूर से लाकर अपने शहर में वितरित करते हैं। यह कार्य अत्यंत आवश्यक था, वरन् जयपुर अपनी दुर्दशा के नए आयाम देख लेता। शहर के लोगों की प्यास बुझने लगती है। दो-चार साल का काम चलता है। पर तभी अचानक फिर प्यास लेने की नौबत आती है। क्यों?

उपरोक्त स्थिति का उत्तर पाने के लिये एक बार ऊपर लिखा किस्सा पुनः पढ़ लीजिये। शहर अब धीरे-धीरे पानी की जरूरत पूरी करने के लिये निरंतर एक के बाद एक दूरी नापते हुये बहुत दूर से पानी लाने को लालायित हैं। देखने सुनने में यह व्यवस्था रोचक लगती है। लेकिन यदि आप द्वारा बनाया गये नये बाँध के जलग्रहण क्षेत्र में लोग वनों और मिट्टी को सुरक्षित ना करें तो क्या होगा?

पहली बात तो यह है कि असंरक्षित जलग्रहण क्षेत्र से पानी के साथ बहकर आने वाली मिट्टी बड़े बाँध का जीवन शीघ्र समाप्त कर देगी। दूसरी बात यह है कि जिस वाटरशेड से पानी सिमट सिमट कर आपके नये बड़े बाँध में आता है, उसके साथ आने वाली मिट्टी उन किसानों की आजीविका को भी बर्बाद करके ही आती है, जिनके पास उस मिट्टी, पेड़ और वनों को संरक्षित करने के लिये आर्थिक संसाधन नहीं हैं।

भारत में प्राचीन काल से जल प्रबंधन एक पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा संचालित होता रहा है। जहाँ वर्षा जल संग्रह की तालाब, तलाई, बंधी, बंधुलिया आदि जैसी संरचनाएँ नष्ट हुई हैं, वहाँ भू-जल का स्तर तेजी से नीचे गिरा है। तालाब (सतही जल) और कुआँ (भूजल) स्तर के बीच पक्की और मजबूत परस्पर क्रिया पाई जाती है।

के लिये भुगतान करते हैं। केवल ऐसे संरक्षित क्षेत्रों से ही साफ-सुथरा पानी बाँधों को मिलता है, जिनसे अंत में शहरों को जल प्रदाय किया जाता है। इस कारण को पूरा करने के लिये ग्रामवासी उच्चकोटि के जलग्रहण विकास कार्यक्रमों को क्रियान्वित करते हैं, जिनमें छोटे-छोटे एनीकट, तालाब और मृदा और जल-संरक्षण संरचनाएँ जैसे प्राकृतिक जलवायु समाधान शामिल हैं। इसके साथ ही जलग्रहण क्षेत्र के वनों और वनस्पतियों का संरक्षण भी किया जाता है। यह भी एक उच्चकोटि का प्राकृतिक जलवायु समाधान है जिसमें कार्बन का संचय, जैव-विविधता का संरक्षण और लोगों की आजीविका का सुदृढ़ीकरण होता है।

स्वाभाविक है कि शहरों को पानी पीना है तो शहरवासियों को अपने बौद्धिक दिवालियापन को छोड़कर आसपास के जलग्रहण क्षेत्रों में तालाब व एनीकट जैसे बहुआयामी जीवनदायी ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में स्वयं निवेश करना होगा। जहाँ से पानी आ रहा है, वहाँ के नागरिकों को जलग्रहण विकास के लिये मुआवजा देना अब दुनिया के बड़े शहरों की नई आर्थिक व्यवस्था है। हाल ही में हुये एक अध्ययन के अनुसार दुनिया के 416 बड़े शहर यही कर रहे हैं जहाँ कुल मिलाकर 25 बिलियन डॉलर से अधिक का लेन-देन हो रहा है। दरअसल अब पूरी दुनिया में जलग्रहण सेवाओं में निवेश बढ़ रहा है। डानुबियन शहर में पानी के उपयोगकर्ता, पेयजल की रक्षा करने वाले कार्यों के लिये अपस्ट्रीम वाटरशेड सेवा आपूर्ति-व्यवस्थाओं को भुगतान करते हैं। ऐसे कार्यक्रम 4.3 बिलियन हेक्टेयर से ज्यादा वाटरशेड क्षेत्रों में 170 बिलियन डॉलर के निवेश से चल रहे हैं। इन कार्यक्रमों से 230 बिलियन से अधिक लोगों को साफ पानी प्राप्त हो रहा है (देखें, नेचर कम्युनिकेशंस, 2018, 9:4375)।

वर्षा-जल संग्रह की छोटी संरचनाएँ क्लाइमेट चेंज के युग में कार्बन-संचय में भी बड़ा काम करती हैं। दुनिया भर में इस प्रकार के तालाब, एनीकट, पौधे व झाड़ियाँ इम्पार्टमेंट प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। अध्ययन बताते हैं कि 500 मिलियन ऐसी छोटी जल संग्रह संरचनाएँ दुनिया भर में मौजूद हैं। जितना जैविक कार्बन दुनिया के इन 500 मिलियन छोटे तालाबों और खेत-तलाइयों में सालाना जमा होता है, वह विश्व के सभी महासागरों में सालाना जमा होने वाले जैविक कार्बन से ज्यादा है। पूरी दुनिया के आंकड़े जोड़ने पर ज्ञात होता है कि प्राकृतिक झीलों में जहाँ कुल 30 से 70 टेरोग्राम कार्बन सालाना जमा होता है, वहीं इन तालाबों, एनीकट आदि में 150 से 220 टेरोग्राम कार्बन सालाना जमा होता है। हालाँकि जैविक कार्बन के वर्तमान कुल संग्रहण (1000 से 4000 टेरोग्राम कार्बन सालाना) की तुलना में यह दर मामूली है, परन्तु यह दर दुनिया भर के महासागर के तलछट में जैविक कार्बन के कुल भंडारण—120-240 टेरोग्राम कार्बन सालाना—से अधिक है। इन संरचनाओं में ऑर्गेनिक कार्बन के जमा होने की दर अधिक से अधिक 17,000 ग्राम कार्बन प्रति वर्ग मीटर प्रति वर्ष से लेकर कम से कम 148 ग्राम कार्बन प्रति वर्ग मीटर प्रति वर्ष हो सकती है। रोचक बात यह है कि छोटी जल-भावर संरचनाओं में यह दर तुलनात्मक रूप से अधिक थी (देखें, ग्लोबल बायोजियोकेमिकल साइकल, 2008, 22:जोबी1018)।

जलग्रहण क्षेत्र विकास एवं प्लेनेट फॉर एनवायरमेंटल सर्विसेज के उपरोक्त सिद्धांत, जिनकी चर्चा आज यहाँ की गई है, को राजस्थान के प्रत्येक शहर में लागू करना अनिवार्य है। आने वाला समय उस परस्पर आर्थिक समन्वय से होने वाले विकास का है, जिसमें शहर और गाँव एक दूसरे की मदद करते हुये

परस्पर सतत विकास में योगदान दें। हालाँकि दुनिया में इस प्रकार की तमाम व्यवस्थाएँ खड़ी हो चुकी हैं, परन्तु अभी हम सो रहे हैं। हमें गरीब नौदर से जागना होगा। विशेषकर हमारे उन इंजीनियर्स को जिन्हें केवल बड़े बाँधों में ही भारत का आर्थिक-सामाजिक मोक्ष दिखता है। बड़े बाँध उपयोगी हैं, लेकिन उनकी सतत उपयोगिता बनाये रखने के लिये छोटे तालाब, खेत तलाई और एनीकट और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं।

मध्य प्रदेश में पूर्व रीवा रियासत को बधेलखंड के नाम से पहचाना जाता है। यहाँ गाँवों में लगभग 5000 तालाब हैं, जो कम से कम 200 वर्षों से लेकर 2000 वर्ष तक पुराने हैं। इन सब की पाल पर वृक्षों और वनस्पतियों के उगाने की परम्परा भी आज तक जीवित है। खेत, तालाब और तालाब की पाल पर वृक्षों की कतारें और उनके ठीक नीचे आम का बगीचा! और उस बगीचे में एक देवस्थान! ऐसे तालाब आप सतना, रीवा, सोधी और शहडोल जिलों के किसी गाँव में देख सकते हैं। यह बधेलखंड का सिमेनर-लैडस्केप है। बुंदेलखंड कहे जाने वाले क्षेत्र में ही यही स्थिति मिलती है। भारत में प्राचीन काल से जल प्रबंध एक पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा संचालित होता रहा है। जहाँ वर्षा जल संग्रह की तालाब, तलाई, बंधी, बंधुलिया आदि जैसी संरचनाएँ नष्ट हुई हैं, वहाँ भू-जल का स्तर तेजी से नीचे गिरा है। तालाब (सतही जल) और कुआँ (भूजल) स्तर के बीच पक्की और मजबूत परस्पर क्रिया पाई जाती है। इसलिए, तालाब और कुम्हें दोनों को पूरक संरचनाओं के रूप में देखा और प्रयुक्त किया जाना चाहिए। सोलर वाटर पंप भी ऐसी ही पूरक संरचना है। हाइड्रोलॉजिकल सेंसिंग बनाये रखने व स्थायी रूप से जल संसाधनों का उपयोग और प्रबंधन करने के लिये तालाब एक विकल्प नहीं बल्कि अनिवार्यता है।

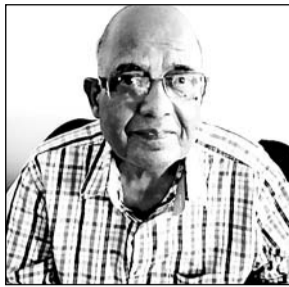
आज का मूल सन्देश यह है कि भारत के प्रत्येक तालाब का संरक्षण और सुधार अनिवार्य है। इस दिशा में भारत सरकार का वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा सभी राज्य सरकारों के वन एवं पर्यावरण विभागों द्वारा प्राकृतिक जलवायु समाधान की दिशा में गहरी प्रतिबद्धता दर्शित की गई है।

इस दिशा में प्रथम चरण में द नैचर कंजर्वेन्स और टैरी स्कूल ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज के सहयोग से भारत के विभिन्न राज्यों में प्राकृतिक जलवायु समाधानों पर 16 राउंडटेबल और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का रहे हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार के सहयोग से दो राष्ट्रीय कार्यशालाएँ प्रस्तावित हैं। आशा की जाती है कि ऐसे नवाचारों द्वारा उपलब्ध ज्ञान को उन लोगों तक पहुँचाने में मदद मिलेगी जो इस ज्ञान का प्रयोग जमीन पर प्राकृतिक जलवायु समाधानों के क्रियान्वयन हेतु कर सकते हैं।

-अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)



डॉ. जे.के. गर्ग

रणबाकुर्ग की जन्म भूमि के लोकनायक की जीवन-यात्रा एक नितान्त साधारण मनुष्य के रूप में शुरू हुई और वे किसी-न-किसी तरह के असाधारण घटनाक्रम में पड़ कर एक असाधारण मनुष्य और लोक देवता में रूपान्तरित हो गये। मान्यता है कि सर्पदंश से बचने के लिए वीर तेजाजी का पूजन किया जाता है। गाँव का चतुर्तरा वीर तेजाजी का थान कहलाता है साँप के ज़हर के तोड़ के रूप में गौ मूत्र और गोबर की राख के प्रयोग की शुरुआत सबसे पहले वीर तेजाजी महाराज ने की थी। मान्यताओं के मुताबिक जब किसी को सर्प दंश हो तो भोपों में तेजाजी की आत्मा आ जाती है और वह जलकर चूसकर सर्प दंश से पीड़ित व्यक्ति को ठीक कर देती है। इसलिए भोपे को तेजाजी का घोड़ला भी कहा जाता है। वीर तेजाजी महाराज को 'काला और बाला का देवता' साँपों का देवता, धोलियावीर एवं गाँवों का मुक्तिदाता तथा कृषि कार्यों का उपकारक देवता कहा जाता है। जाट लोग भगवाना दिश को तेजाजी के नाम से जानते हैं। रिजल्टेड वीकली आफ इंडिया के 28 जून 1971 के जाट विशेषांक अनुसार जाट लोगों के घरों तेजा मंदिर हुआ करते थे। अनेक शिवलिंगों में एक तेज लिंग भी होता है जिसके जाट लोग उपासक थे। वीर तेजाजी महाराज के लिये रचित लोक साहित्य को 'तेजा टेर/तेजा गीत' कहा जाता है। तेजाजी की स्मृति में 2011

उपरोक्त स्थिति का उत्तर पाने के लिये एक बार ऊपर लिखा किस्सा पुनः पढ़ लीजिये। शहर अब धीरे-धीरे पानी की जरूरत पूरी करने के लिये निरंतर एक के बाद एक दूरी नापते हुये बहुत दूर से पानी लाने को लालायित हैं। देखने सुनने में यह व्यवस्था रोचक लगती है। लेकिन यदि आप द्वारा बनाया गये नये बाँध के जलग्रहण क्षेत्र में लोग वनों और मिट्टी को सुरक्षित ना करें तो क्या होगा?

पहली बात तो यह है कि असंरक्षित जलग्रहण क्षेत्र से पानी के साथ बहकर आने वाली मिट्टी बड़े बाँध का जीवन शीघ्र समाप्त कर देगी। दूसरी बात यह है कि जिस वाटरशेड से पानी सिमट सिमट कर आपके नये बड़े बाँध में आता है, उसके साथ आने वाली मिट्टी उन किसानों की आजीविका को भी बर्बाद करके ही आती है, जिनके पास उस मिट्टी, पेड़ और वनों को संरक्षित करने के लिये आर्थिक संसाधन नहीं हैं।

भारत में प्राचीन काल से जल प्रबंधन एक पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा संचालित होता रहा है। जहाँ वर्षा जल संग्रह की तालाब, तलाई, बंधी, बंधुलिया आदि जैसी संरचनाएँ नष्ट हुई हैं, वहाँ भू-जल का स्तर तेजी से नीचे गिरा है। तालाब (सतही जल) और कुआँ (भूजल) स्तर के बीच पक्की और मजबूत परस्पर क्रिया पाई जाती है।

के लिये भुगतान करते हैं। केवल ऐसे संरक्षित क्षेत्रों से ही साफ-सुथरा पानी बाँधों को मिलता है, जिनसे अंत में शहरों को जल प्रदाय किया जाता है। इस कारण को पूरा करने के लिये ग्रामवासी उच्चकोटि के जलग्रहण विकास कार्यक्रमों को क्रियान्वित करते हैं, जिनमें छोटे-छोटे एनीकट, तालाब और मृदा और जल-संरक्षण संरचनाएँ जैसे प्राकृतिक जलवायु समाधान शामिल हैं। इसके साथ ही जलग्रहण क्षेत्र के वनों और वनस्पतियों का संरक्षण भी किया जाता है। यह भी एक उच्चकोटि का प्राकृतिक जलवायु समाधान है जिसमें कार्बन का संचय, जैव-विविधता का संरक्षण और लोगों की आजीविका का सुदृढ़ीकरण होता है।

स्वाभाविक है कि शहरों को पानी पीना है तो शहरवासियों को अपने बौद्धिक दिवालियापन को छोड़कर आसपास के जलग्रहण क्षेत्रों में तालाब व एनीकट जैसे बहुआयामी जीवनदायी ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में स्वयं निवेश करना होगा। जहाँ से पानी आ रहा है, वहाँ के नागरिकों को जलग्रहण विकास के लिये मुआवजा देना अब दुनिया के बड़े शहरों की नई आर्थिक व्यवस्था है। हाल ही में हुये एक अध्ययन के अनुसार दुनिया के 416 बड़े शहर यही कर रहे हैं जहाँ कुल मिलाकर 25 बिलियन डॉलर से अधिक का लेन-देन हो रहा है। दरअसल अब पूरी दुनिया में जलग्रहण सेवाओं में निवेश बढ़ रहा है। डानुबियन शहर में पानी के उपयोगकर्ता, पेयजल की रक्षा करने वाले कार्यों के लिये अपस्ट्रीम वाटरशेड सेवा आपूर्ति-व्यवस्थाओं को भुगतान करते हैं। ऐसे कार्यक्रम 4.3 बिलियन हेक्टेयर से ज्यादा वाटरशेड क्षेत्रों में 170 बिलियन डॉलर के निवेश से चल रहे हैं। इन कार्यक्रमों से 230 बिलियन से अधिक लोगों को साफ पानी प्राप्त हो रहा है (देखें, नेचर कम्युनिकेशंस, 2018, 9:4375)।

वर्षा-जल संग्रह की छोटी संरचनाएँ क्लाइमेट चेंज के युग में कार्बन-संचय में भी बड़ा काम करती हैं। दुनिया भर में इस प्रकार के तालाब, एनीकट, पौधे व झाड़ियाँ इम्पार्टमेंट प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। अध्ययन बताते हैं कि 500 मिलियन ऐसी छोटी जल संग्रह संरचनाएँ दुनिया भर में मौजूद हैं। जितना जैविक कार्बन दुनिया के इन 500 मिलियन छोटे तालाबों और खेत-तलाइयों में सालाना जमा होता है, वह विश्व के सभी महासागरों में सालाना जमा होने वाले जैविक कार्बन से ज्यादा है। पूरी दुनिया के आंकड़े जोड़ने पर ज्ञात होता है कि प्राकृतिक झीलों में जहाँ कुल 30 से 70 टेरोग्राम कार्बन सालाना जमा होता है, वहीं इन तालाबों, एनीकट आदि में 150 से 220 टेरोग्राम कार्बन सालाना जमा होता है। हालाँकि जैविक कार्बन के वर्तमान कुल संग्रहण (1000 से 4000 टेरोग्राम कार्बन सालाना) की तुलना में यह दर मामूली है, परन्तु यह दर दुनिया भर के महासागर के तलछट में जैविक कार्बन के कुल भंडारण—120-240 टेरोग्राम कार्बन सालाना—से अधिक है। इन संरचनाओं में ऑर्गेनिक कार्बन के जमा होने की दर अधिक से अधिक 17,000 ग्राम कार्बन प्रति वर्ग मीटर प्रति वर्ष से लेकर कम से कम 148 ग्राम कार्बन प्रति वर्ग मीटर प्रति वर्ष हो सकती है। रोचक बात यह है कि छोटी जल-भावर संरचनाओं में यह दर तुलनात्मक रूप से अधिक थी (देखें, ग्लोबल बायोजियोकेमिकल साइकल, 2008, 22:जोबी1018)।

जलग्रहण क्षेत्र विकास एवं प्लेनेट फॉर एनवायरमेंटल सर्विसेज के उपरोक्त सिद्धांत, जिनकी चर्चा आज यहाँ की गई है, को राजस्थान के प्रत्येक शहर में लागू करना अनिवार्य है। आने वाला समय उस परस्पर आर्थिक समन्वय से होने वाले विकास का है, जिसमें शहर और गाँव एक दूसरे की मदद करते हुये

परस्पर सतत विकास में योगदान दें। हालाँकि दुनिया में इस प्रकार की तमाम व्यवस्थाएँ खड़ी हो चुकी हैं, परन्तु अभी हम सो रहे हैं। हमें गरीब नौदर से जागना होगा। विशेषकर हमारे उन इंजीनियर्स को जिन्हें केवल बड़े बाँधों में ही भारत का आर्थिक-सामाजिक मोक्ष दिखता है। बड़े बाँध उपयोगी हैं, लेकिन उनकी सतत उपयोगिता बनाये रखने के लिये छोटे तालाब, खेत तलाई और एनीकट और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं।

मध्य प्रदेश में पूर्व रीवा रियासत को बधेलखंड के नाम से पहचाना जाता है। यहाँ गाँवों में लगभग 5000 तालाब हैं, जो कम से कम 200 वर्षों से लेकर 2000 वर्ष तक पुराने हैं। इन सब की पाल पर वृक्षों और वनस्पतियों के उगाने की परम्परा भी आज तक जीवित है। खेत, तालाब और तालाब की पाल पर वृक्षों की कतारें और उनके ठीक नीचे आम का बगीचा! और उस बगीचे में एक देवस्थान! ऐसे तालाब आप सतना, रीवा, सोधी और शहडोल जिलों के किसी गाँव में देख सकते हैं। यह बधेलखंड का सिमेनर-लैडस्केप है। बुंदेलखंड कहे जाने वाले क्षेत्र में ही यही स्थिति मिलती है। भारत में प्राचीन काल से जल प्रबंध एक पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा संचालित होता रहा है। जहाँ वर्षा जल संग्रह की तालाब, तलाई, बंधी, बंधुलिया आदि जैसी संरचनाएँ नष्ट हुई हैं, वहाँ भू-जल का स्तर तेजी से नीचे गिरा है। तालाब (सतही जल) और कुआँ (भूजल) स्तर के बीच पक्की और मजबूत परस्पर क्रिया पाई जाती है। इसलिए, तालाब और कुम्हें दोनों को पूरक संरचनाओं के रूप में देखा और प्रयुक्त किया जाना चाहिए। सोलर वाटर पंप भी ऐसी ही पूरक संरचना है। हाइड्रोलॉजिकल सेंसिंग बनाये रखने व स्थायी रूप से जल संसाधनों का उपयोग और प्रबंधन करने के लिये तालाब एक विकल्प नहीं बल्कि अनिवार्यता है।

आज का मूल सन्देश यह है कि भारत के प्रत्येक तालाब का संरक्षण और सुधार अनिवार्य है। इस दिशा में भारत सरकार का वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा सभी राज्य सरकारों के वन एवं पर्यावरण विभागों द्वारा प्राकृतिक जलवायु समाधान की दिशा में गहरी प्रतिबद्धता दर्शित की गई है।

इस दिशा में प्रथम चरण में द नैचर कंजर्वेन्स और टैरी स्कूल ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज के सहयोग से भारत के विभिन्न राज्यों में प्राकृतिक जलवायु समाधानों पर 16 राउंडटेबल और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का रहे हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार के सहयोग से दो राष्ट्रीय कार्यशालाएँ प्रस्तावित हैं। आशा की जाती है कि ऐसे नवाचारों द्वारा उपलब्ध ज्ञान को उन लोगों तक पहुँचाने में मदद मिलेगी जो इस ज्ञान का प्रयोग जमीन पर प्राकृतिक जलवायु समाधानों के क्रियान्वयन हेतु कर सकते हैं।

-अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

## “प्राण जाई पर वचन नहीं” के प्रेरक व ग्रामीणों के जननायक लोक देवता तेजाजी

की आहुति देने वाले तेजाजी राजस्थान उत्तरप्रदेश मध्यप्रदेश गुजरात एवं पंजाब के भी लोक-नायक हैं। रघुकुल रीत सदा चली आई प्राण जाये पर वचन नहीं जी का पालन करते हुए तेजा जी का बलिदान आज भी हम सभी को प्रेरणा देता है तेजाजी के निर्वाण दिवस भाद्रपद शुक्ल दशमी को प्रतिवर्ष तेजा दशमी के रूप में मनाया जाता है। भक्त तेजाजी के मन्दिरों में जाकर पूजा-अर्चना करते हैं और दूसरी मन्त्रों के साथ-साथ सर्प-दंश से होने वाली मृत्यु के प्रति अभय भी प्राप्त करते हैं। किन्तिवियों और लोक मान्यता के मुताबिक उन्हें भगवान शिव का प्यारहवाँ अवतार माना जाता है। तेजाजी की कर्मस्थली तथा प्रमुख तीर्थस्थल बूँदी का बासी दुगारी क्षेत्र है। वीर तेजाजी महाराज का पूजन पर्व भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि के दिन तेजा दशमी के रूप में मनाया जाता है। मध्यप्रदेश और राजस्थान उत्तरप्रदेश मध्यप्रदेश पंजाब हरियाणा के गाँव-गाँव में तेजा दशमी मनाई जाती है। इस दिन अनेक जगहों पर तेजाजी के मंदिरों में मेले का भी आयोजन किया जाता है। वीर तेजाजी के वंशज मध्ये भारत के खिलौपुर से आकर मारवाड़ में बस गये थे। नागवंश के धवलराज अर्थात् धौलाराज के नाम पर धौल्या गौत्र शुरू हुआ। तेजाजी के पूर्वज उदयराज ने मारवाड़ के खड़नाल परगने में 24 गाँव पर कब्जा कर खड़नाल को अपनी राजधानी बनाया।

तेजाजी का जन्म विक्रम संवत् 1130 माघ सुदी चौदस (गुरुवार 29 जनवरी 1074, अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार) के दिन खड़नाल में हुआ था। उनके पिता राजस्थान में नागौर जिले के खरनाल के मुखिया ताहड़ जी थे। तेजाजी के माता और पिता भगवान शिव के उपासक थे। तेजाजी महाराज का विवाह बचपन में ही पत्नी गंगा में रायमल जी की पुत्री पेमल के साथ हुआ। तेजाजी की स्मृति में 2011 पांच रुपये की डाक-टिकट जारी किया गया था। “प्राण जाये पर वचन नहीं जाए” का पालन करते हुए अपने प्राणों

उन्के पेमल के साथ शादी के बारे में कई सालों तक नहीं बताया था। उस वक्त गाँव में परंपरा थी की वर्षा होने पर कबीले के मुखिया सबसे पहले खेत में हल जोतने की शुरुआत करते थे और उसके बाद ही गाँव के अन्य किसान हल जोतते थे। अपने पिता और बड़े भाई की अनुपस्थिति के कारण तेजाजी खेतों में पहुँच कर हल चलाने लगे, काम करते करते दोपहर हो गई एवं तेजाजी भूख से परेशान होकर भोजन लेकर आने वाली अपनी भाभी का इंतजार करने लगे उनका खाना ले कर खेतों पर पहुँची अपनी भूख से परेशान तेजा ने उन्हें उलाहना दिया जिस से भाभी अपना आपा खो बेठी और उन्हें तंज मारते हुए बोली अगर आपको समय पर खाना चाहिये तो तुम अपनी बीबी पेमल को उसके पीहर से क्यों नहीं ले लाते ? भाभी की बातें सुन कर तेजा को विस्वास ही नहीं हुआ कि उनकी शादी हो चुकी है और वे तिलमिलते हुए घर आ कर माँ से पूछा मेरी शादी कहाँ कब और किसके साथ हुई? माँ ने उन्हें कहा तुम्हारा ससुराल पत्ने में रायमल जी के घर है और तुम्हारी पत्नी का नाम पेमल है।

तेजा ससुराल जाने को आतुर हो गये तब तेजाजी की को उलाहना देते हुए बोली भाभी बोली अपनी दुल्हन पेमल को घर पर लाने अपनी बहन राजल को तो उसके ससुराल से ले आओ पीहर लेकर आओ और उसके यहाँ आने के बाद पेमल को लेने अपने ससुराल जाना। तेजाजी अपनी बहन राजल को लिये अपने ससुराल के गाँव अजमेर के पास तबीजी से ले आये तेजाजी ने अपनी माँ और भाभी से पनेर जाने की इजाजत लेकर वे एक दिन लुहा ही अपनी पत्नी पेमल को लेने के निकल पड़े अपनी ससुराल पत्ने आ गये थे।

अपने ससुराल किसी बात वे पेमल के माता पिता से नाराज करते हुए ही तेजाजी को नाराज करने लगे। तेजाजी ने वापस लौटने लगे तभी ही पेमल ने अपनी सहेली लाछा गुजरी को संदेश दे कर भेजा अगर वो मुझे खरनाल नहीं ले जाएँ तो मे जहर खा कर मर जाऊँगी मैंने इतने वर्ष आपके इंतजार में निकाले हैं मैं आपके चरणों में रह कर आपकी सेवा

करूँगी। रूपवती पेमल की व्यथा देखकर तेजाजी उसे अपने साथ ले जाने को राजी हो गये और उससे बात करके अपने साथ चलने को कहा, तभी एकाएक वहाँ लाछां ने आकर कहा कि मेर के मेणा डाकू उनकी को चुरा कर ले गए हैं, इसलिए तेजा जी आप मेरी गाँवों को डाकूओं से छुड़ा कर लायें। तेजाजी गाँवों को लाने के अपने पांचों हथियार लेकर अपनी घोड़ी लौलण पर सवार हुए। रास्ते में उन्हें एक इच्छाधारी काला नाग आग में जलता हुआ दिखाई दिया तेजाजी ने तुरंत अपने पाँचों से नाग को बाग से बाहर निकाला। नाग उन्हें धन्ववाद देने बजाय क्रोधित होकर बोला क्योंकि तुम मेरी मुक्ति में बाधक बने हो इसलिए मैं तुमको डसूँगा। तेजाजी बोले नाराज मरते डबते और जलते हों को बचाना मानव का धर्म है।

तेजाजी ने प्रार्थित स्वरूप नाराज की बात मान ली और नाराज को वापिस लौट आने का वचन देकर ससुराल की घाटी में पहुँचें जहाँ मंतायिका की पहाडियों में डाकूओं के साथ उनका भयंकर संघर्ष जिसमें तेजाजी के शरीर पर अंको गहरे घाव हो गये और वो लहलुहान हो गये लडाईं में अनेको डाकू मारे गये डब बागी के डाकू भाग गये। वादा पूरा करने के लिये तेजा जी नाग राज के पास जाकर उस डसने के लिय अपने को प्रस्तुत कर दिया। लहलुहान तेजाजी देख कर नाराज बोले तेजा तुम्हारे रोम रोम से तो खून टपक रहा है, मैं तुम्हें कहाँ डसूँ? तेजाजी बोले कि मेरे हाथ को हथेली व जीभ पर कोई घाव नहीं है इसलिए आप यहाँ डस लें। नाराज बोला तुम शूरवीर होने के साथ साथ अपने वचन के पक्के भी हो तुम्हारी सच्चाई के सामने मैं हार गया हूँ मैं तुम्हें वरदान देता हूँ कि तुम अपने कुल के एक मात्र देवता बनोगे।

आज के बाद काला सर्प का काटा हुआ कोई व्यक्ति यदि तुम्हारे नाम की ताँती बांध लेगा तो उसका जहर उतर जायेगा। तेजाजी ने कहा-नाराज आपको मुझे डसना ही होगा। आखिर तेजाजी की जिद्द से हारकर तेजाजी की जीभ पर डस लिया।

तेजाजी ने प्रार्थित स्वरूप नाराज की बात मान ली और नाराज को वापिस लौट आने का वचन देकर ससुराल की घाटी में पहुँचें जहाँ मंतायिका की पहाडियों में डाकूओं के साथ उनका भयंकर संघर्ष जिसमें तेजाजी के शरीर पर अंको गहरे घाव हो गये और वो लहलुहान हो गये लडाईं में अनेको डाकू मारे गये डब बागी के डाकू भाग गये। वादा पूरा करने के लिये तेजा जी नाग राज के पास जाकर उस डसने के लिय अपने को प्रस्तुत कर दिया। लहलुहान तेजाजी देख कर नाराज बोले तेजा तुम्हारे रोम रोम से तो खून टपक रहा है, मैं तुम्हें कहाँ डसूँ? तेजाजी बोले कि मेरे हाथ को हथेली व जीभ पर कोई घाव नहीं है इसलिए आप यहाँ डस लें। नाराज बोला तुम शूरवीर होने के साथ साथ अपने वचन के पक्के भी हो तुम्हारी सच्चाई के सामने मैं हार गया हूँ मैं तुम्हें वरदान देता हूँ कि तुम अपने कुल के एक मात्र देवता बनोगे।

आज के बाद काला सर्प का काटा हुआ कोई व्यक्ति यदि तुम्हारे नाम की ताँती बांध लेगा तो उसका जहर उतर जायेगा। तेजाजी ने कहा-नाराज आपको मुझे डसना ही होगा। आखिर तेजाजी की जिद्द से हारकर तेजाजी की जीभ पर डस लिया।

—डॉ. जे के गर्ग, पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

## सभी जीवों के कल्याण में मानव मात्र का कल्याण निहित है : राज्यपाल मिश्र

पाली, (निसं)। राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कहा कि भारतीय संस्कृति और समाज में गुरु और गाय का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। गाय भारतीय संस्कृति में पुरानीय है। भारत में हमारा भगवान श्री कृष्ण और भगवान शंकर ने नन्दन और नन्दी को महत्व

- 'भारतीय संस्कृति और समाज में गुरु और गाय का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण'
- पाली में रूप रजत विहार में रूप रजत विशिष्ट अथितिगृह व वाचनालय का उद्घाटन किया

दिया है जिसमें इन गौवंश को अहम स्थान दिया गया है। राज्यपाल शनिवार को पाली में रूप रजत विहार में रूप रजत विशिष्ट अथितिगृह व वाचनालय के उद्घाटन अवसर पर आयोजित समारोह को सम्बोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सभी जीवों के कल्याण में मानव मात्र का कल्याण निहित है। उन्होंने उपस्थित आमजन को संबोधित करते हुए कहा कि संत महात्माओं के चिंतन को आगे बढ़ाएँ और उनके सेवा संकल्पों से समाज को लाभान्वित करें। उन्होंने कहा कि वैदिक काल से गौ माता सनातन संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग रही है। गाय में गुणों